DR. NARAYAN CHAKRABARTY

Dr. Narayan Chakrabarty is a multifaceted personality. He is widely known for his works on Arsenic Toxicity. Besides having a successful career spread across academics, research, and administration, he is also a well-known author, social worker, and columnist in daily newspaper and reputed magazines.

2. Born on 1st August, 1954, Dr. Chakrabarty holds PhD in Analytical Chemistry from Jadavpur University (1987). He took up his teaching and research as his career since 1981 at Government Colleges of West Bengal and retired as Head of the Department of Chemistry, Maulana Azad College, Kolkata (2006). Post retirement, he worked as a Visiting Professor at post graduate level in the Zoology Department for eight years (2012 to 2019). He also taught Green Chemistry in the P.G. level at West Bengal State University (2014-2016).

3. For two years (2014-2016) Dr. Chakrabarty was a Consultant and Director with West Bengal Biotech Development Corporation, under Department of Biotechnology, Government of West Bengal. He was member of various technical committees of the Biotechnology Department of the State Government.

4. Dr. Chakrabarty's research works pivoted around remediation and treatment of Arsenic toxicity. Regenerative Medicine is a key part of the treatments. He is also a Fellow of Regenerative Medicine and Translational Science (FRMTS) from West Bengal University of Health Sciences (2017). He is a Life-Fellow of Indian Chemical Society and was a member of American College of Nutrition. He has various research publications in multiple journals related to Sanitary Engineering, improvement of Complexing agents etc.

5. Dr. Chakrabarty is the sole editor of a globally acclaimed book "Arsenic Toxicity : Prevention and Treatment" published by CRC press, Taylor and Francis, Boca Raton, Florida, USA (2015). Beyond his research related activities, he had always been actively involved in different UNICEFF, CPHEEO, and Government of India programs as resource person and key-note speaker. He delivered lecture on "Arsenic : The deadly menace and its combating" at the Annual Conference of ACN (2012) as an invited speaker. He was invited to deliver a lecture "Remediation of Arsenic Toxicity : A challenge to the neutraceuticals and functional foods" at a conference of ISNFF at Istanbul (2014). He was a guest speaker on "Remediation of Arsenic Toxicity" at IFT Conference, Chicago, USA (2015). Recently he authored two books in Bengali (2021). One is "Corona atimarir itikotha (History of Corona pandemic). It is a compilation of research and his thought leadership on the origin, impact and future of Covid pandemic. The other is "Dharma Siksha and Rajniti (Religion Education Politics). This book captures his point of views on contemporary agendas in West Bengal and Bharat related to religion, education and politics. His creative intellectual works cover various aspect of such as the role of Government under the leadership of Prime Minister to curb the Covid menace. He has presented unmotivated facts to recognize and eulogize the activities of savior of Bengal, Shri Gopal Mukherjee (Gopal Patha) and creator of West Bengal Shri Shyama Prasad Mukherjee. As an author, his creative intellectual works have been widely appreciated.

डॉ. नारायण चक्रवर्ती

डॉ. नारायण चक्रवर्ती बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। वह आरसहेनिक विषाक्तता पर उनके कार्य के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं। शिक्षा, शोध और प्रशासन में एक सफल करियर के अलावा, वह एक प्रसिद्ध लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता और दैनिक समाचार पत्रों तथा प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के स्तंभकार भी हैं।

2. 1 अगस्त, 1954 को जन्मे, डॉ. चक्रवर्ती ने जादवपुर विश्वविद्यालय (1987) से एनालिटिकल कैमिस्ट्री में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने 1981 से पश्चिम बंगाल के सरकारी कॉलेजों में शिक्षण और शोध को अपने करियर के रूप में चुना और मौलाना आज़ाद कॉलेज, कोलकाता (2006) में कैमिस्ट्री डिपार्टमेंट के अध्यक्ष के रूप में सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद, उन्होंने आठ वर्षों (2012 से 2019) तक प्राणिशास्त्र विभाग में पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में काम किया। उन्होंने वेस्ट बंगाल स्टेट यूनिवर्सिटी (2014–2016) में पीजी स्तर पर ग्रीन केमिस्ट्री भी पढ़ायी।

3. दो वर्षों (2014–2016) तक डॉ. चक्रवर्ती पश्चिम बंगाल सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के तहत पश्चिम बंगाल बायोटेक विकास निगम में सलाहकार और निदेशक थे। वह राज्य सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग की विभिन्न तकनीकी समितियों के सदस्य थे।

4. डॉ. चक्रवर्ती का शोध कार्य आर्सेनिक विषाक्तता के निवारण और उपचार पर केंद्रित है। रीजेनेरेटिव मेडिसिन उपचार का एक प्रमुख हिस्सा है। वह वेस्ट बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज के रीजेनेरेटिव मेडिसिन एंड ट्रांसलेशनल साइंस (एफआरएमटीएस) के फेलो (2017) भी हैं। वह इंडियन केमिकल सोसाइटी के लाइफ–फेलो हैं और अमेरिकन कॉलेज ऑफ़ न्यूट्रिशन के सदस्य रह चुके हैं। सेनेटरी इंजीनियरिंग, इंप्रूवमेंट ऑफ कॉम्प्लेक्सिंग एजेंट्स आदि से संबंधित उनके शोध पत्र विभिन्न जर्नल में प्रकाशित हो चुके हैं।

5. डॉ. चक्रवर्ती सीआरसी प्रेस, टेलर एंड फ्रांसिस, बोका रैटन, फ्लोरिडा, यूएसए (2015) द्वारा प्रकाशित और विश्व स्तर पर प्रशंसित पुस्तक "आर्सेनिक टॉक्सिसिटी: प्रिवेंशन एंड ट्रीटमेंट" के एकमात्र संपादक हैं। अपने शोध कार्यों के अलावा, वह हमेशा रिसोर्स पर्सन और मुख्य वक्ता के रूप में यूनिसेफ, सीपीएचईईओ और भारत सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं। उन्होंने एसीएन के वार्षिक सम्मेलन (2012) में आमंत्रित वक्ता के रूप में "आर्सेनिक: घातक खतरा और उसका मुकाबला" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्हें इस्तांबुल (2014) में आईएसएनएफएफ के एक सम्मेलन में "आर्सेनिक विषाक्तता का निवारण: न्यूट्रास्यूटिकल्स और फंक्शनल फूड्स के लिए एक चुनौती" विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। वह आईएफटी सम्मेलन, शिकागो, यूएसए (2015) में "आर्सेनिक विषाक्तता के निवारण" पर अतिथि वक्ता थे। हाल ही में उन्होंने बंगाली (2021) में दो किताबें लिखीं। पहली पुस्तक "कोरोना अतिमारिर इतिकोथा (कोरोना महामारी का इतिहास)"। यह कोविड महामारी की उत्पत्ति, प्रभाव और भविष्य पर उनके शोध और विचारों का संकलन है। दूसरी किताब "धर्म शिक्षा और राजनीति''। यह पुस्तक पश्चिम बंगाल और भारत में धर्म, शिक्षा और राजनीति से संबंधित समकालीन विषयों पर उनके दृष्टिकोण को दर्शाती है। उनके रचनात्मक बौद्धिक कार्यों में विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जैसे कि कोविड के खतरे पर काबू पाने के लिए प्रधान मंत्री के नेतृत्व में सरकार की भूमिका। उन्होंने बंगाल के समाजसुधारक श्री गोपाल मुखर्जी (गोपाल पाठा) और पश्चिम बंगाल के निर्माता श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी के कार्यों को मान्यता देने और उनकी सराहना करने के लिए वास्तविक तथ्य पेश किए हैं। एक लेखक के रूप में उनके रचनात्मक बौद्धिक कार्यों को व्यापक सराहना मिली है।